(अ) बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र	15 प्रश्न
1. मनोविज्ञान	03–08
2. बाल विकास की अवधारणा एवं इसका अधिगम में संबंध।	09–15
3. विकास और विकास को प्रभावित करने वाले कारक।	16–18
4. बाल विकास के सिद्धांत।	19–20
5. बालकों का मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यवहार संबंधी समस्याएँ।	21–23
6. वंशानुक्रम एवं वातावरण का प्रभाव।	24–26
7. समाजीकरण प्रक्रियाएँ :सामाजिक जगत एवं बच्चे (शिक्षक, अभिभावक, साथी)	27–28
8. पियाजे, पॉवलव, कोहलर और थार्नडाईकः रचना एवं आलोचनात्मक स्वरूप।	29–32
9. बाल केन्द्रित एवं प्रगतिशील शिक्षा की आवधारणा।	33–34
10. बुद्धि की रचना का आलोचनात्मक स्वरूप और उसका मापन, बहुआयामी बुद्धि।	35–41
11. व्यक्तित्व और उसका मापन।	42–52
12. भाषा और विचार।	53–55
13. सामाजिक निर्माण के रूप में जेंडर, जेंडर की भूमिका, लिंगभेद और शैक्षिक प्रथाएं।	56–58
14. अधिगम के लिए आंकलन और अधिगम का आंकलन में अंतर, शाला आधारित आंकलन, सतत एवं समग्र मूल्यांकनः स्वरूप और प्रथाएं (मान्यताएं)	59–65
(ब) समावेशित शिक्षा की अवधारणा एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समझ	5 प्रश्न
15. समावेशित शिक्षा की अवधारणा एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समझ	66–67
16. अलाभान्वित, एवं वंचित वर्गो सहित विविध पृष्ठभूमियों के अधिगमकर्त्ताओं की पहचान।	68–68
17. अधिगम कठिनाइयों, 'क्षति' आदि से ग्रस्त बच्चों की आवश्यकताओं की पहचान।	69–80
18. प्रतिभावन, सृजनात्मक, विशेष क्षमता वाले अधिगमकर्त्ताओं की पहचान।	81–83
19. समस्याग्रस्त बालकः पहचान एवं निदानात्मक पक्ष।	84–85
20. बाल अपराधः कारण एवं प्रकार।	86–86
(स) अधिगम और शिक्षा शास्त्र (पेडागाजी)	10 प्रश्न
21. बच्चे कैसे सोचते और सीखते हैं, बच्चे शाला प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में क्यों और कैसे असफल होते हैं।	87–87
22. शिक्षण और अधिगम की मूलभूत प्रक्रियाएं, बच्चों के अधिगम की रणनीतियाँ,अधिगम एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में, अधिगम का सामाजिक संदर्भ।	88–94
23. समस्या समाधानकर्ता और वैज्ञानिक–अन्वेषक के रूप में बच्चा।	95–95
24. बच्चों में अधिगम की वैकल्पिक धारणाएँ, बच्चों की त्रुटियों को अधिगम प्रक्रिया में सार्थक कड़ी के रूप में समझना। अधिगम को प्रभावित करने वाले कारकः अवधान और रूचि।	96–96
25. संज्ञान और संवेग।	97–98
26. अभिप्रेरणा और अधिगम।	99–103
27. निर्देशन एवं परामर्श।	104–106
28. अधिक्षमता और उसका मापन।	107–107
29. स्मृति और विस्मृति।	108–110
30. मनोविज्ञान के प्रमुख सिद्धांत एवं प्रतिपादक	111–116

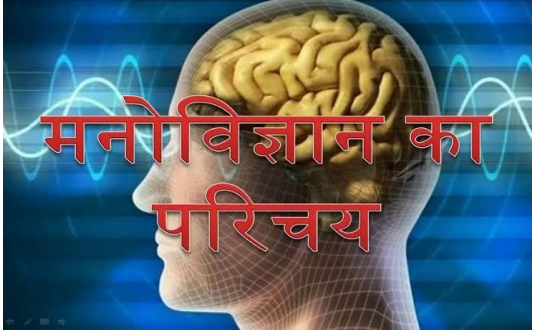

मनोविज्ञान के लिए साइकोलॉजी (*Psychology*) शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ग्रीक मनोविज्ञानी रुडोल्फ गोइकिल (1547–1628) ने किया था। सन् 1590में रुडोल्फ गोइकिल ने मनोविज्ञान की पहली पुस्तक साइकोलोजिया लिखी।

मनोविज्ञान के विकास का क्रम :–

एच.ए. रेबर्न ने अपनी पुस्तक एन इंट्रोडक्सन टू साइकोलोजी मे उल्लेख किया है कि विज्ञान ने अरस्तु के समय में दर्शनशास्त्र के अंग के रूप में अपना जीवन आरंभ किया।

आत्मा का विज्ञान :–

- दर्शन की एक शाखा के रूप मे मनोविज्ञान का जन्म प्लेटो (427–347*B.C.*) तथा अरस्तू (384–322*B.c*) के समय हुआ । निरुक्त (*Etymology*) के आधार पर यूनानी दार्शनिकों ने साइकोलोजी को आत्मा का विवेचन कहा।
- ग्रीक /यूनानी दार्शनिकों ने मनोविज्ञान की परिभाषा आत्मा (*soul*) के विज्ञान के रूप मे की थी।
- प्राचीन समय में मनोविज्ञान के रूप में की थी।
- प्राचीन समय में मनोविज्ञान का यह रूप मानसिक दर्शन या आत्मा का दर्शन के नाम से जाना जाता था।
- केलर के अनुसार अरस्तु को मनोविज्ञान का जनक कहा जाता है।
- गौरिट के अनुसार : साइकोलॉजी शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के दो शब्दों से हुई है–

साइकी (*Psyche*) का अर्थ है :– आत्मा अथवा अंतः करण

लोगस (*Logos*) का अर्थ है :– विज्ञान या किसी वस्तु का व्यवस्थित अध्ययन अतः प्राचीन काल में साइकोलॉजी या मनोविज्ञान का अर्थ –आत्मा का अध्ययन या आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना माना जाता था।

प्रमुख समर्थक :–

यूनानी दार्शनिक – प्लेटो, अरस्तू डेकार्टे रुडोल्फ गोइकिल ने भी 1590 में मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान कहा था।

- आलोचनाः आत्मा का स्वरूप रंग रूप कैसा है, स्पष्ट नही है।

मन मस्तिष्क का विज्ञान :–

मध्य युग में / 17वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को मन का विज्ञान कहा जाने लगा।

इटली के मनौविज्ञान पोम्पोनाजी ने इसे मस्तिष्क का अध्ययन करने वाला विज्ञान बताया।

- समर्थक :– पोम्पोनाजी (इटली), जॉन लॉक, थॉमस रीड (1710–1796)
- आलोचना :– मस्तिष्क का स्वरूप अनिश्चित रहने के कारण परिभाषा अस्वीकार

चेतना का विज्ञान/चेतन अनुभूति का विज्ञान :–

- 19वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया।
- मनोविज्ञान मनुष्य की चेतन क्रियाओं का अध्ययन करना है।
- विलियन जेम्स व वुन्ट ने 1879 ने लिपजिंग में मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला स्थापित की तथा चेतना के अध्ययन के लिए आत्मनिरीक्षण विधि का प्रयोग किया।
- समर्थक :– विलियम जेम्स एवं विलियम वुंट एवं ई.बी.टीचर, जेम्स सली
- आलोचना :– चेतन मन के अलावा अचेतन मन और अर्द्धचेतन मन भी होते है। फायड के अनुसार चेतन मन तो हमारे मन का 1/10 भाग ही होता है अचेतन मन का उल्लेख इसमें नहीं है।

व्यवहार का विज्ञान :–

- 20वीं शताब्दी के आरम्भ में मनेाविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान कहा जाने लगा।
- वाटसन को व्यवहारवाद का पिता कहा जाता है।

वाटसन :–

''मनोविज्ञान व्यवहार का निश्चित विज्ञान है।''

वुडवर्थ :–

''मनोविज्ञान वातावरण के सम्बन्ध में व्यक्ति की क्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है।''

सभी प्रकार से किसी प्राणी के व्यवहार का नियमन करने और उसे अच्छी तरह समझने में सहायता प्रदान करना है।

➢ **प्रमुख समर्थक :–**

विलियम मैक्डूगल, ई.जी. बोरिंग,वुडवर्थ, चार्ल्स ई. स्किनर, पिल्सबरी

➢ **वुडवर्थ :–** सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा का परित्याग किया इसके बाद मन और फिर चेतना को भी भुला दिया। हाँ इसका सम्बन्ध अब भी व्यवहार से बना हुआ है।

अनुभूति तथा व्यवहार का विज्ञान :–

➢ मनोविज्ञान की आधुनिक परिभाषा के अन्तर्गत मनोविज्ञान को अनुभूति तथा व्यवहार का विज्ञान कहा गया है। अनुभूति में चेतन और अचेतन अनुभूति शामिल है और व्यवहार में आन्तरिक और बाह्य व्यवहार शामिल है।

1. **बोरिंग, लेंगफिल्ड तथा वेल्ड :–** ''मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन उसकी प्रतिक्रियाओं एवं चेतन अनुभूति दोनों रूप में करता है।
2. **आर. ए. बैरोग (2003) :–** ''मनोविज्ञान की सबसे अच्छी परिभाषा है कि मनोविज्ञान व्यवहार तथा संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का विज्ञान है।
3. **क्रूक्स (साईकोलॉजी : Science behaviour and life1998) :–** ''मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो मानवों एवं अन्य पशुओं के व्यवहार तथा मानसिक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।''

व्यवहार शब्द अर्थ :–

➢ **सभी क्रियाएं :–** चलना, तैरना, नाचना (इन्द्रियजनित)

➢ **अनुभूति सम्बन्धी क्रियाएँ :–** उदास होना, क्रोधित होना

➢ **मस्तिष्क सम्बन्धी क्रियाएँ :–** सोचना, विचारना, कल्पना करना।

➢ चेतन व अर्द्धचेतन मानव व्यवहार असामान्य व्यक्तियों, बच्चों युवकों प्रौढ़ों सभी का व्यवहार यहाँ व्यवहार शब्द में शामिल है।

मनोविज्ञान की प्रमुख परिभाषाएं :–

1. **बोरिंग लैगफेल्ड व डेल्ड :–** ''मनोविज्ञान मानव प्रकृति का अध्ययन है।''
2. **गैरिसत :–** ''मनोविज्ञान का सम्बन्ध प्रत्यक्ष मानव व्यवहार से''
3. **मन :–** ''आधुनिक मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यवहार की वैज्ञानिक खोज से है।''
5. **क्रो एवं क्रो :–** ''मनोविज्ञान मानव व्यवहार और मानव संबंधों का अध्ययन है।
6. **पिल्सबरी :–** '' मनोविज्ञान की सबसे संतोषजनक परिभाषा मानव व्यवहार के विज्ञान के रूप मे की जा सकती है।
7. **जेम्स :–** ''मनोविज्ञान की सर्वोत्तम परिभाषा चेतना के वर्णन और व्याख्या के रूप में की जा सकती है।
8. **मैक्डूगल :–** ''मनोविज्ञान आचरण एवं व्यवहार का यथार्थ विज्ञान है।''
9. **वाटसन :–** ''मनोविज्ञान व्यवहार का धनात्मक विज्ञान है।''
10. **वुडवर्थ :–** ''सबसे पहले मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा का त्याग किया फिर उसने अपने मन या मस्तिष्क का त्याग किया। उसके बाद उसने चेतना का त्याग किया। अब वह व्यवहार की विधि को स्वीकार करता है।
11. **स्किनर :–** ''मनोविज्ञान जीवन की सभी प्रकार की परिस्थितियों में प्राणी की प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। प्रक्रियाओं अथवा व्यवहार का तात्पर्य है– प्राणी की सब प्रकार की गतिविधियाँ, समायोजनाएँ, क्रियाएँ एवं अभिव्यक्तियाँ

मनोविज्ञान के सम्प्रदाय



❖ वुंट ने 1862 में ब्रीट्रेज नामक पुस्तक में मनोविज्ञान को एक स्वतन्त्र विज्ञान होने का दावा किया।

❖ 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षो में मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान के विषय वस्तु तथा उसके अध्ययन विधि के बारे में करीब–करीब समान विचार व्यक्त किये परन्तु अन्य मनोवैज्ञानिकों का इन लोगों द्वारा समान ढंग से विरोध भी किया गया। ऐसे समूह को मनोविज्ञान का स्कूल की संज्ञा दी गई। इस अर्थ में मनोविज्ञान के कई स्कूल जैसे संरचनावाद, प्रकार्यवाद, व्यवहारवाद आदि का विकास हुआ।

❖ इन सभी स्कूलों द्वारा मनोविज्ञान को अपने–अपने ढंग से परिभाषित किया गया तथा इसके विषय वस्तु

1. संरचनावाद :– वुर्ट ने संरचनावाद के विकास की पृष्टभूमि तैयार की। उन्होंने मनोविज्ञान की विषयवस्तु चेतन अनुभूति को माना और अन्तः निरीक्षण को विधि माना। उन्होंने अन्तः निरीक्षण के आधार पर चेतन अनुभूति पर प्रयोगात्मक अध्ययन किया।

- सरंचनावाद को औपचारिक रूप टिचनर ने दिया।
- चेतना में सवेंदना, प्रत्यक्ष ज्ञान, कल्पना आदि सम्मिलित है। संरचनावाद में अंतरदर्शनात्मक विश्लेषण के द्वारा मन और चेतना का स्वरूप जानने का प्रयास किया गया है।
- इस सम्प्रदाय का सबसे बड़ा योगदान मनोवैज्ञानिक अध्ययन में वैज्ञानिक पद्धति पर बल देना हैं।

2. प्रकार्यवाद (कार्यात्मवाद) :–

- इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक विलियम **जेम्स जॉन डिवी** एवं **जेम्स एंजिल** माने जाते है।
- प्रकार्यवाद के अनुसार मानसिक क्रियाएँ गतिशील और सप्रयोजन होती है। प्रकार्यवादियों ने संपूर्ण व्यक्ति के अध्ययन पर जोर दिया और मनोविज्ञान तथा जीव विज्ञान में घनिष्ठ संबंध स्थापित किया।
- इस सम्प्रदाय का मुख्य उद्देश्य उन क्रियाओं को ज्ञात करना होता है जो व्यक्ति को कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करती है।
- प्रकार्यवाद पाठ्यक्रम की विषय वस्तु की उपयोगिता पर अधिक बल देता है।
- बाल मनोविज्ञान, बुद्धि परीक्षण तथा व्यक्तित्व विभिन्नता आदि उपागमों को प्रस्तुत करने का श्रेय इसी सम्प्रदाय को जाताा है।
- इसके विकास में अमेरिका में शिकागो और कोलम्बिया विश्वविद्यालयों के मनोवैज्ञानिकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

3. साहचर्यवाद :–

- इस सम्प्रदाय की स्थापना जॉन लॉक ने की थी। इसके अंतर्गत स्पंदन तथा स्मृति में ज्ञात करने के साहचर्य को स्वीकार किया गया है।
- साहचर्यवाद ब्रिटिश अनुभववाद का ही एक वर्धित रूप हैं।
- जॉन स्टुअर्ट जेम्स मिल बेन तथा हरबर्ट स्पेन्सर इसी सम्प्रदाय से सम्बन्धित रहे है।

1. पुराना साहचर्यवाद :– ब्रिटिश दर्शनशास्त्रीयों को साहचर्यवाद था जिसमें विचारों के साहचर्य की व्याख्या समानता, विरोध तथा कारण के नियमों के आधार पर की गयी थी।

2. आधुनिक साहचर्यवाद :– इसमें साहचर्य का सम्बन्ध उद्दीपत्र अनुक्रिया के साहचर्य से स्थापित किया गया। जिससे प्रयोगात्मक जाँच सम्भव हो सकी।

अमेरिका जॉन ब्रॉड्स वॉटसन माने जाते है।

- इनकी विचारधारा ई. पावलॉव (रूस) के परीक्षणों के परिणामों पर आधारित है।
- इस विचार धारा के अनुसार मनोविज्ञान का उद्देश्य मानव व्यवहार की व्याख्या, नियंत्रण एवं उसके सम्बन्ध में भविष्यवाणी करना है।
- इसके अनुसार परिवेश में आवश्यक परिवर्तन करके किसी भी व्यक्ति को कुछ भी बनाया जा सकता है।

5. गैस्टाल्ट वाद (समग्रवाद) :–

- इस सम्प्रदाय के प्रतिपादक – वर्दाइमर, कोफ्का, वुल्फ जी. कोहलर तथा कर्ट लेविन।
- इस सम्प्रदाय का जन्म जर्मनी में लगभग 1912 में हुआ।
- गैस्टाल्ट शब्द का अर्थ हैं – रूप, आकृति।
- इसके अनुसार मनोविज्ञान को व्यवहार तथ अनुभव के प्रकार का अध्ययन करना चाहिए।
- पूर्ण से अंश की ओर शिक्षण पद्धति इसी विचारधारा की देन है।

6. प्रेरक (प्रयोजनवादी) सम्प्रदाय :–

- इस विचारधारा के प्रतिपादक – विलियम मैक्ड्रगल।
- आत्म सम्मान को विशेष महत्व देने वाले इस सम्प्रदाय के अनुसार सभी कार्यो के पीछे कोई न कोई उद्देश्य अथवा प्रयोजन होता है।
- इस सम्प्रदाय को कारणीयता भी कहते हैं। यह (Hormic School) सम्प्रदाय मशीनी या व्यवहार–विचार के बिल्कुल विरूद्ध हैं। इसे प्रेरक इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह प्रेरणा, कार्य करने या कार्य करने की इच्छा पर बल देता है।

7. मनोविश्लेषणात्मक :–

- इस सम्प्रदाय के प्रतिपादक – सिगमंड फ्रायड (ऑस्ट्रिया) माने जाते हैं।
- फ्रॉयड ने व्यक्ति के व्यवहार निर्धारण एवं व्यक्तित्व को निश्चित रूप देने के लिए यौन कारक पर बहुत बल दिया है। उनके अनुसार यौन कारक के कारण ही बालक में पितृ विरोधी भावना ग्रन्थि का तथा बालिका में मातृ विरोधी भावना ग्रन्थि का निर्माण होता है।
- एक मात्र ऐसा सम्प्रदाय है जिसकी स्थापना विश्व विद्यालय परिसर में न होकर नैदानिक (Clinical) परिसर में हुई है।

विधियों का उपयोग किया जाता है। वैज्ञानिक अन्वेषण सुनिश्चित, वस्तुगत व प्रमाणित होते हैं। अपने अनुसंधानों में शिक्षा मनोवैज्ञानिक अपनी समस्याओं के लिये वैज्ञानिक अभिवृत्ति का मार्ग अपनाते हैं तथा प्रदत्तो का संकलन एवं विश्लेषण वैज्ञानिक विधि द्वारा करते हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान में समस्याओं का अध्ययन करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वे शुद्ध हों एवं उनके परिणाम वेध (Valid) तथा विश्वसनीय (Reliable) हों। अनेक विषयों की तरह शिक्षा मनोविज्ञान की भी अपनी विधियाँ हैं।

अध्ययन विधि से हमारा तात्पर्य – 'एक निश्चित व्यवस्था के अनुसार अध्ययन करना।

(क) आत्मगत विधि (Subjective Method) :–

इस विधि में व्यक्ति अपने आप अपनी मानसिक क्रियाओं का अध्ययन कर विश्लेषण करता है। **'स्किनर'** ने इसे वैज्ञानिक रूप दिया हैं।

♦ अर्न्तदर्शन विधि (Intropospection Method) :–

यह सबसे प्राचीन विधि हैं। इसका विस्तृत विवेचन भारतीय योगशास्त्र में किया गया है। इसे आत्म निरीक्षण अथवा अंतः निरीक्षण भी कहते हैं। अंतः दर्शन का अर्थ है– स्वयं में देखना (To Look Within) स्वयं अपने अन्दर झाँकना। इसके द्वारा व्यक्ति अपनी मानसिक अवस्था की अनुभूति करता हैं।

♦ अन्तरानुभवों की संचय विधि (Acededotal Method) :–

इस विधि में छात्र–छात्राएँ अपने पूर्व अनुभवों का पुनः स्मरण करते हैं और इस आधार पर लेख तैयार करते हैं।

(ख) वस्तुगत विधियाँ (Objective Method) :–

वस्तुगत विधियों के अन्तर्गत शिक्षा मनोविज्ञान में अनेक विधियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं।

- अवलोकन विधि
- प्रश्नावली विधि
- व्यक्ति इतिहास विधि
- प्रयोगात्मक विधि
- विकासात्मक विधि
- परीक्षण विधि
- सांख्यिकी विधि
- जैविकीय विधि
- मनोविश्लेषणात्मक विधि
- मनोविक्रमात्मक विधि

❖ अंतर्दर्शनीय का अर्थ हैं – अंदर देखना या अंदर की क्रियाओं को देखना (स्वयं में देखना)।

❖ इस विधि में मनोवैज्ञानिक या कोई भी व्यक्ति स्वयं अपने मन का निरीक्षण कर समय–समय पर उत्पन्न होने वाली भावनाओं, विचारों, कल्पनाओं आदि का निरीक्षण व विश्लेषण करता हैं।

❖ यह मनोविज्ञान की प्राचीनतम विधि है। जॉन लॉक के अनुसार 'आत्म निरीक्षण या अंतदर्शन में मस्तिष्क द्वारा अपनी क्रियाओं का स्वयं निरीक्षण किया जाता है।

❖ मनोविज्ञान में व्यवहार के साथ–साथ मानसिक प्रक्रियाओं को केवल निरीक्षण से नहीं जाना जा सकता, व्यक्ति स्वयं ही उनको अंर्तदर्शन से जान सकता हैं।

अंर्तदर्शन के लाभ :–

❖ यह मनोविज्ञान की मौलिक विधि है।

❖ इसमें निरीक्षण को यंत्र आदि की आवश्यकता नहीं पड़ती। व्यक्ति जब चाहे अपनी मानसिक अवस्थाओं और क्रियाओं का विश्लेषण कर सकता है।

अंर्तदर्शन के दोष :–

❖ इस विधि द्वारा मन की प्रक्रियाओं को प्रत्यक्ष जाना जा सकता है परंतु इसके आधार पर कोई सामान्य नियम नहीं बनाया जा सकता क्योंकि यह आवश्यक नहीं है कि अन्य व्यक्तियों का अनुभव भी वहीं हो, जो एक व्यक्ति का है।

❖ अंर्तदर्शन के साथ निरीक्षण तथा प्रयोग पद्धति का प्रयोग किए बिना मनोविज्ञान में किसी विषय का समुचित अध्ययन नहीं हो सकता।

❖ मानसिक प्रक्रियाएँ परिवर्तनशील और अस्पष्ट होती है। अतः इन पर ध्यान लगाना कठिन है। अंर्तदर्शन का ज्ञान आत्मगत और व्यक्तिगत है।

(2) निरीक्षण विधि

''व्यवहार का निरीक्षण करके मानसिक दशा को जानना''

❖ व्यवहारवाद के जनक जे.बी. वाटसन निरीक्षण विधि के प्रवर्तक माने जाते है।

❖ निरीक्षण विधि को बर्हिदर्शन विधि/ अवलोकन विधि/ प्रेक्षण विधि भी कहा जाता है इस विधि में प्राणियो के व्यवहार का अध्ययन किसी विशेष परिस्थिति में किया जाता है।

❖ निरीक्षण विधि से बाह्य जीवन और वस्तु के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। मनोविज्ञान में बालकों, पशुओं, व्यक्ति तथा समूह आदि के व्यवहार के अध्ययन हेतु यह विधि अपरिहार्य है।